ॐ

R. LALL
Educational Publishers
Since 1991

आंकलन के लिये अधिगम

LEARNING FOR ASSESSMENT

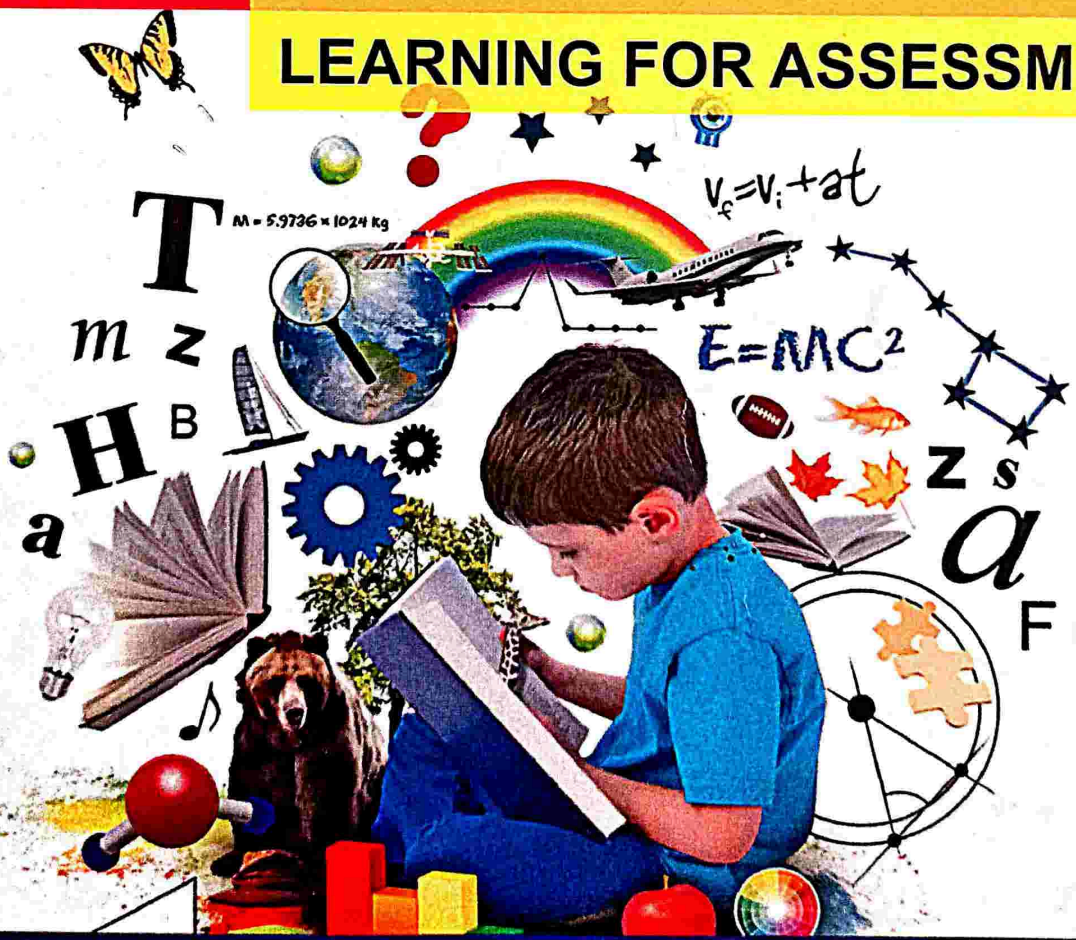

● डॉ० रामकेश पाण्डेय ● डॉ० भारती द्विवेदी ● फजल इकबाल

आंकलन के लिये अधिगम

[LEARNING FOR ASSESSMENT]

[विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारी बाग के नवीनतम् पाठ्यक्रमानुसार पाठ्यपुस्तक]

लेखकगण

डॉ० रामकेश पाण्डेय
निर्देशक/प्राचार्य
एम०ए०, एम०एड०, पी०एच-डी०
आदित्य प्रकाश जालान टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज
कुदलुम राँची, (झारखण्ड)

डॉ० भारती द्विवेदी
एम०ए०, पी०एच-डी०
असिस्टेंट प्रोफेसर
जे० एन० कॉलेज धुर्वा राँची, (झारखण्ड)

फजल इकबाल
एम-एस०सी० (भौतिक विज्ञान), एम०ए० (अंग्रेजी), एम०एड०, एम०फिल० (शिक्षाशास्त्र)
सीनियर असिस्टेन्ट प्रोफेसर
माँ विन्ध्यवासिनी कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदमा
हजारीबाग (झारखण्ड)

SPECIMEN COPY

एकमात्र वितरक

आर० लाल बुक डिपो
(AN ISO 9001-2008 Certified Company)
निकट गवर्नमेंट इण्टर कॉलिज, मेरठ—250001

❑ *प्रकाशक :*
विनय रखेजा
C/o आर० लाल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
(AN ISO 9001-2008 Certified Company)
निकट गवर्नमेंट इण्टर कॉलिज, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ—250001
फोन : (0121) 2643623, 2666235 (O)
e-mail : rlall_meerut@yohoo.com
Order Booking No. 0121–4054773
8881143685

© सर्वाधिकार प्रकाशक

ISBN : 978-93-87053-08-3

❑ *मूल्य :* **₹ 300/-**

❑ *लेज़र टाइप सैटिंग :*
जे० एम० डी० कम्प्यूटर्स, मेरठ।

❑ *मुद्रक :*
राज प्रिन्टर्स
गढ़ रोड, मेरठ।

वैधानिक चेतावनी—इस पुस्तक की सम्पूर्ण विषय-सामग्री (रेखाचित्रों तथा छायाचित्रों सहित) के सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। अतः कोई भी व्यक्ति इस पुस्तक का नाम, टाइटिल, डिजाइन तथा विषय-सामग्री आदि को आंशिक या पूर्ण रूप से घुमा-फिराकर प्रकाशित करने का प्रयास न करें। अन्यथा कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे और हानि के लिये स्वयं उत्तरदायी होंगे।

- यद्यपि इस पुस्तक को यथासम्भव शुद्ध और त्रुटि रहित प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है तथापि इसमें कोई कमी अथवा त्रुटि मानवीय भूल से रह गयी हो तो उससे होने वाली क्षति अथवा पीड़ा के लिये लेखक, प्रकाशक, मुद्रक एवं विक्रेता का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा। किसी भी वाद-विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र केवल मेरठ न्यायालय ही होगा।
- इस पुस्तक में रह गयी तथ्यात्मक त्रुटियों अथवा अन्य किसी भी कमी के लिये प्रबुद्ध पाठकगणों से सुझाव आमंत्रित हैं। प्राप्त सुझावों के आधार पर त्रुटियों का समायोजन आगामी संस्करण में कर दिया जायेगा।

ॐ

R. LALL
Educational
Publishers
Since 1991

बाल्यावस्था एवं विकास

डॉ० रामकेश पाण्डेय
डॉ० भारती द्विवेदी
डॉ० के०पी० सिंह

बी०एड० के नवीनतम् द्विवर्षीय पाठ्यक्रमानुसार

बाल्यावस्था एवं विकास

(Childhood and Growing Up)

बी०एड० के दो वर्षीय पाठ्यक्रम के अनुरूप
विनोबा भावे हजारीबाग विश्वविद्यालय के लिए पाठ्यपुस्तक

लेखकगण

डॉ० रामकेश पांडेय
निदेशक/प्राचार्य
एम०ए०, एम०एड०, पी०एच-डी०
आदित्य प्रकाश जालान टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज,
कुदलुम राँची, झारखंड

डॉ० भारती द्विवेदी
एम०ए०, पी०एच-डी०
असिस्टेंट प्रोफेसर : जे०एन० कॉलेज,
धुर्वा, राँची, झारखंड

डॉ० के०पी० सिंह
एम-एस०सी० (गणित), एम०एड०, पी०एच-डी० (शिक्षाशास्त्र)
अध्यक्ष : शिक्षा विभाग, बी०एम० कॉलिज ऑफ एजूकेशन
(सम्बद्धता : महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, हरियाणा)
जगदीशपुर, सोनीपत (हरियाणा)

SPECIMEN
with Best Compliments from :
AUTHORS & PUBLISHER

एकमात्र वितरक

आर. लाल बुक डिपो
(An ISO 9001-2008 Certified Company)
निकट राजकीय इण्टर कॉलेज, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ-250 001

बाल्यावस्था एवं विकास

—डॉ० रामकेश पांडेय,
—डॉ० भारती द्विवेदी
—डॉ० के०पी० सिंह

प्रकाशक :
विनय रखेजा
C/o आर० लाल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
निकट राजकीय इण्टर कॉलेज, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ-250001
फोन नं. : 0121-2643623, 2666235
Website : www.rlall.in
e-mail : info@rlall.in

Order Booking No. : 0121-4054773

संस्करण : नवीनतम संस्करण

© Publisher

ISBN : 978-93-87053-00-7

मूल्य : ₹ 250/-

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक की सम्पूर्ण विषय-सामग्री के छायाचित्र लेखक के पास सुरक्षित हैं। अतः कोई भी व्यक्ति इसका नाम, शीर्षक, डिजाइन तथा विषय-सामग्री आदि को आंशिक या घुमा-फिराकर प्रकाशित करने का प्रयास न करे, अन्यथा कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे और हानि के लिए उत्तरदायी होगा। यद्यपि इस पुस्तक को यथासम्भव त्रुटिरहित रखने का प्रयास किया गया है तथापि यदि किसी भी मानवीय भूल, कमी या टंकण व तकनीकी सम्बन्धी त्रुटि रह गई हो तो इससे होने वाली क्षति या पीड़ा के लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक एवं विक्रेता का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा। लेखक इस प्रकार की त्रुटि के लिए खेद व्यक्त करता है तथा पाठकों से आग्रह है कि किसी भी त्रुटि को लेखक के संज्ञान में लाएँ, जिससे उसे आगामी संस्करण में दूर कर दिया जाए। फिर भी किसी भी प्रकार के वाद-विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र मेरठ न्यायालय ही होगा।

मुद्रक :-
मोहन प्रिंट मीडिया (प्रा०) लि.
मेरठ

Laser typesetting at :
Dhankar Computers
Meerut (U.P.)

डॉ. शैलेश कुमार सिंह वर्तमान में ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा की अनुषांगिक इकाई डी. वी. कॉलेज, जयनगर (बिहार) के वाणिज्य विभाग में सहायक प्रोफेसर के रूप में सेवारत हैं। डॉ. सिंह को इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय, इलाहाबाद और डॉ. राम मनोहर लोहिया विश्वविद्यालय, फैजाबाद (यू.पी.) के पुरातन छात्र के साथ-साथ महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ (यू.पी.) के प्रथम डॉक्टरेट होने का गौरव भी प्राप्त है। डॉ. सिंह महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ (यूपी), गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़) व श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्य कर चुके हैं। वह इंटरनेशनल जर्नल आफ टेक्नोलॉजी, मैनेजमेंट एंड ह्यूमैनिटीज, शोध समीक्षा और मूल्यांकन के संपादकीय सदस्य के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। डॉ. सिंह इंडियन एसोसिएशन फॉर मैनेजमेंट डेवलपमेंट के त्रैमासिक जर्नल मैनेजमेंट डेवलपमेंट के मुख्य संपादक व वेंकटेश्वरा अंतरराष्ट्रीय बहुभाषी शोध जर्नल के प्रबंध संपादक के रूप में अतुलनीय कार्य कर रहे हैं। डॉ. सिंह ने वर्ष 2014 में अपने शिक्षण करियर की शुरुआत की तदोपरांत वह सक्रिय रूप से बीमा, अर्थशास्त्र, लेखांकन और सामान्य प्रबंधन के क्षेत्र में शिक्षण और अनुसंधान का कार्य कर रहे हैं। डॉ. सिंह के अंतरराष्ट्रीय / राष्ट्रीय सम्मेलनों और पत्रिकाओं में तीन दर्जन से अधिक शोध पत्र प्रकाशित है, वही उन्होंने तीन दर्जन से अधिक पुस्तकों का संपादन करने के साथ समसामयिक विषय तनाव पर अधारित स्ट्रेस मैनेजमेंट, वित्तीय प्रबंधन, लागत लेखांकन और जी.एस.टी. शीर्षक पुस्तकों का लेखन भी किया है। डॉ. सिंह को रिसर्च एक्सीलेंस अवार्ड, शिक्षा श्री सम्मान, मिथिला गौरव सम्मान, भिखारी ठाकुर साहित्य सम्मान सहित दर्जनों राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुआ है। डॉ. सिंह रामनरेश सिंह एजुकेशनल फाउंडेशन के संस्थापक महासचिव के रुप में सक्रीय योगदान दें रहे हैं, वह ग्रामीण क्षेत्र में प्राथमिक और उच्च शिक्षा के विकास के लिए विभिन्न गैर सरकारी संगठनों के साथ भी कार्य कर रहे हैं।

डॉ. पंकज कुमार पाण्डेय, वर्तमान में ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा से सम्बद्ध किरण टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, पण्डौल, मधुबनी, बिहार के शिक्षा- संकाय (बी.एड.) में सहायक प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। डॉ. पाण्डेय मूलतः उत्तर प्रदेश के शहीदों की धरती जिला गाजीपुर के सैदपुर तहसील की शिक्षा की गौरवशाली परम्परा से आच्छादित, लेखक का शिक्षक -प्रशिक्षण महाविद्यालयों में विगत बारह वर्षों का शिक्षण अनुभव है। "शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर पश्चिमी और भारतीय दार्शनिक विचार: वाराणसी जिले के विशेष सन्दर्भ में "विषय पर शोध के उपरान्त भारतीय शिक्षा मनीषियों पर तथा शिक्षा के विभिन्न विषयों पर बारह शोध-पत्र प्रकाशित हो चुके हैं,आपको नेपाल के विश्वविद्यालय द्वारा "शिक्षा भूषण सम्मान"से अप्रैल- 2023 में तथा कालिन्दी प्रकाशन द्वारा "शिक्षा रत्न सम्मान"से जुलाई- 2023 में एवं रामनरेश सिंह एजुकेशनल फाउण्डेशन, उत्तर प्रदेश द्वारा "विकास रत्न सम्मान" से फरवरी-2024 में सम्मानित किया गया है, आपके पास NAAC (राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद) जैसे मानक पर कार्य करने एवं विश्वविद्यालयी परीक्षा के परीक्षा - नियन्त्रक का भी विशेष अनुभव है, आप के द्वारा चार बी.एड .पाठ्यक्रम एवं सात एडिटिंग पुस्तकें लिखी गई हैं, आपको अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संगोष्ठीयों, वर्कशॉप, संकाय विकास कार्यक्रम एवं कान्फ्रेंस आदि का अभिन्न अनुभव प्राप्त है। डॉ. पाण्डेय उत्तर बिहार के ग्रामीण क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षा के उत्थान के लिए कोआर्डिनेटर, मिथिलांचल के रूप में आर. एस. एजुकेशनल फाउण्डेशन के साथ कार्य कर रहें हैं।

डॉ. सत्येन्द्र सिंह यादव, सहायक प्राध्यापक, सत्येन्द्र किशन कॉलेज ऑफ एजुकेशन, मिशिर मनियारी, सिलौट ,मुजफ्फरपुर , बिहार में कार्यरत हैं। यह मूलतः उत्तर प्रदेश के छोटी काशी के नाम से प्रसिद्ध गाजीपुर जिले के सैदपुर तहसील की शिक्षा की गौरवशाली परंपरा से आच्छादित लेखक का शिक्षक- प्रशिक्षण महाविद्यालय में विगत 10 वर्षों का शिक्षण अनुभव है 'उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की क्षमताओं पर संवादात्मक मीडिया का प्रभाव' शोध के उपरांत विविध विषयों के शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं आपके पास NAAC जैसे मानक पर कार्य करने एवं विभिन्न प्रकार की परीक्षा कराने का अनुभव है। आप शिक्षा भूषण सम्मान से सम्मानित है, और आपकी समकालीन भारत और शिक्षा पुस्तक भी प्रकाशित है। आपको सेमिनार,वर्कशॉप तथा कॉन्फ्रेंस आदि का अभिन्न अनुभव प्राप्त है।

A Publication of RS Educational Foundation, Ballia (U.P.)

Swaranjali Publication
swaranjalipublication@gmail.com
1-B, 10-B, Vasundhara,
Ghaziabad, (U.P. - 201012)
www.swaranjalipublication.co.in
8700124880, 9810749840

Price ₹ 833/-
ISBN 978-93-5470-910-4

समकालीन भारत एवं शिक्षा
(Contempory India and Education)
सिंह ★ पाण्डेय ★ यादव

NEP

समकालीन भारत और शिक्षा

(Contempory India and Education)

डॉ. शैलेश कुमार सिंह
डॉ. पंकज कुमार पाण्डेय
डॉ. सत्येंद्र सिंह यादव

समकालीन भारत एवं शिक्षा

(Contemporary India and Education)

डॉ. शैलेश कुमार सिंह

संस्थापक महासचिव - आर० एस० एजुकेशनल फाउंडेशन
सहायक प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर, मधुबनी (बिहार)
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा (बिहार)

डॉ. पंकज कुमार पाण्डेय

सहायक प्राध्यापक
किरण टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज
पण्डौल, मधुबनी, बिहार

डॉ. सत्येन्द्र सिंह यादव

सहायक प्राध्यापक
सत्येन्द्र किशन कॉलेज ऑफ एजुकेशन
मिशिर मनियारी, सिलौट, मुजफ्फरपुर (बिहार)

All rights are reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the copyright holder.

संपादक : **डॉ. शैलेश कुमार सिंह**
डॉ. पंकज कुमार पाण्डेय
डॉ. सत्येंद्र सिंह यादव

प्रकाशक : स्वरांजलि प्रकाशन
सेक्टर 10-बी, वसुंधरा,
गाजियाबाद (यूपी) 201012

फ़ोन : 9810749840, 8700124880
इ-मेल : swaranjalipublication@gmail.com

वेबसाइट : www.swaranjalipublication.co.in

पुस्तक : **समकालीन भारत एवं शिक्षा**
प्रकाशन वर्ष : 2024
आई.एस.बी.एन. : 978-93-5470-910-4
मूल्य : ₹ 899.00 मात्र

द्वारा मुद्रित : स्वरांजलि प्रिंटर्स, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश - 201012

Book Available on : www.buybox.me

अध्याय – 8 42
भारत में उच्च शिक्षा में निजीकरण के जन्म और प्रभावों का अवलोकन
विपिन मार्टिन

अध्याय – 9.....49
उच्च शिक्षा का निजीकरण
मुक्ता श्रीवास्तव

अध्याय – 10.....54
वैदिक कालीन शिक्षा
कमलेंद्र नाथ त्रिपाठी

अध्याय – 11.....60
वैदिक शिक्षण पद्धति का वैशिष्टय
तुलसी कुमारी

अध्याय – 12.....68
आधुनिक भारतीय स्वराज में धर्म निरपेक्षता का महत्व : एक विवेचना
डॉ अर्यमा

अध्याय – 13.....73
आदिवासी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 का दृष्टिकोण
डॉ.पंकज कुमार पाण्डेय एवं डॉ. सत्येन्द्र सिंह यादव

अध्याय – 14.....80
राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना : 2005 की विशेषताएँ, उद्देश्य एवं प्रमुख सफारिशें
मनोज कुमार तिवारी

अध्याय – 15.....89
कोठारी आयोग शिक्षा आयोग 1964–1966

कुमारी स्वर्णा मिश्र

अध्याय –16.....96
बौद्ध कालीन शिक्षा

डॉ. अश्वनी कुमार सिंह

10

वैदिक कालीन शिक्षा

कमलेंद्र नाथ त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर,
आदित्य प्रकाश जालान टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज,
कुदलुम, नगड़ी, राँची

वैदिक कालीन शिक्षा से हमारा तात्पर्य उस शिक्षा व्यवस्था से है, जिसका वर्णन वेदों तथा वैदिक साहित्य में उल्लिखित किया गया है। भारतीय इतिहास में ई.पू. से 600 वर्ष तक के समय को वैदिक कालीन शिक्षा के रूप में जाना जाता है। इस समय वैदिक ऋचाओं की रचना, वेदों के संकलन तथा वेदों पर आधारित धार्मिक, सामाजिक व शिक्षा व्यवस्था के प्रचलन का समय था। इस समय कोई व्यवस्थित प्रयास प्रायः नहीं किया गया था जैसा कि वर्तमान में शिक्षा के आदर्शों, सिद्धांतों तथा विभिन्न पक्षों की चर्चा करने का प्रयोजन प्रचलित है। अतः वैदिक कालीन शिक्षा पर एक साथ और व्यवस्थित सामग्री उपलब्ध नहीं है। वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था को साधारणतया निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है –

शिक्षा का सम्प्रत्यय

शिक्षा को समाज में परिवर्तन एवं सुधार लाने का एक साधन के रूप में जाना जाता है। ऋग्वेद में कहा गया है कि आँख, कान, नाक आदि में सभी मनुष्य समान हैं, पर जो ज्ञानवान हो जाते हैं वे अन्यों से श्रेष्ठ होते हैं (अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो मनोजवेषु असमा वभूवुः – ऋग्वेद : 10/71/7)। शिक्षा हमें ज्ञानवान बनाती है, जिससे हम उचित–अनुचित में अन्तर करने के योग्य बनते हैं। विद्या के अभाव में मनुष्य का जीवन कुत्ते की पूँछ की तरह व्यर्थ है (पुनः पुच्छिमिव व्यर्थ जीवितं विद्या बिना। नगुहा गोपने शक्तं न च दंश निवारणे – सुभाषित रत्न भण्डार)। अतः शिक्षा वह साधन है जो मनुष्य के उचित–अनुचित में भेद करने के योग्य बनाने के साथ–साथ जीवन को सार्थक बनाती है।

शिक्षा का उद्देश्य : डॉ. अल्तेकर ने प्राचीन वैदिक कालीन शिक्षा के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य बताये हैं –

1. **धार्मिक भावना का विकास करना** – वैदिक कालीन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति करना था। मनुष्य की ईश्वर में पूर्ण आस्था के कारण धर्म के द्वारा सत्य तक पहुँचकर मोक्ष प्राप्त करने का प्रयास करना था। छात्रों को अपने मन पर यत्र–तत्र भटक कर मोक्ष प्राप्ति में बाधा न बन सके। ि ाक्षा के द्वारा इस उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता था।
2. **चरित्र का निर्माण करना** – वैदिक कालीन शिक्षा में सबसे अधिक महत्वपूर्ण पक्ष सदाचार था। आचार ही उनके लिए परम धर्म था (आचारः परमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च –